टपक सिंचाई से पानी व समय की होती बचत

पंचायतनामा डेस्क

ड्रीप इरिगेशन यानी टपक सिंचाई प्रणाली के महत्व को गुमला के किसान समझने लगे हैं. जिले के विभिन्न क्षेत्रों के किसानों को जायका प्रोजेक्ट के तहत जेएसएलपीएस के सदस्य ड्रीप इरिगेशन की महत्ता को बखूबी समझा रहे हैं. इसके माध्यम से किसानों को बताया जा रहा है कि किस तरह से ड्रीप इरिगेशन से न सिर्फ पानी की बर्बादी रुकेगी, बल्कि खाद भी जरूरत के हिसाब से फसलों तक पहुंचेगी. इतना ही नहीं, इसमें खर्च में भी कमी आयेगी और किसानों को आमदनी भी अच्छी होगी. मतलब ड्रीप इरिगेशन अपनाओ और परेशानियों से छुटकारा पाओ. किसानों को इसका लाभ भी मिल रहा है.

ड्रीप इरिगेशन के फायदे

इस विधि को अपनाने से किसानों को कई फायदे होते हैं. जहां पानी की बर्बादी पर रोक लगता है, वहीं समय की भी बचत होती है. इसके अलावा श्रम की बचत और खेतों में उगने वाले खर-पतवार भी नहीं उगते हैं. इस विधि से पानी जरूरत के हिसाब से सीधे जड़ों में ही पहुंचता है.

जायका प्रोजेक्ट के तहत अपने खेतों में टपक सिंचाई प्रणाली का उपयोग करते किसान.

महादेव चगरी गांव की महिला किसान धनिया उरांव ने पानी के महत्व को समझा

गुमला जिले के भरनो प्रखंड का एक गांव महादेव चगरी. अताकोरा पंचायत के अधीन आनेवाला यह गांव राष्ट्रीय राजमार्ग से काफी अंदर और प्रखंड मुख्यालय से काफी दूर है. इसके कारण यह इलाका काफी पिछड़ा है. क्षेत्र की अधिकतर आबादी कृषि पर निर्भर है. भौगोलिक स्थिति से यह इलाका काफी ऊंचा-नीचा है. इस कारण यहां पानी की काफी समस्या रहती है. किसानों को सिंचाई के लिए काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता है. किसानों की इसी समस्या को देखते हुए जेएसएलपीएस ने क्षेत्र की महिला किसानों को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है. साथ ही क्षेत्र में पानी की समस्या को दूर करने का प्रयास किया गया. जेएसएलपीएस ने क्षेत्र की महिला किसानों को ड्रीप इरिगेशन यानी टपक सिंचाई प्रणाली के माध्यम से आत्मनिर्भर बनाने की कोशिश की है. महादेव चगरी की महिला किसान धनिया उरांव ने भी पानी के महत्व को समझा और टपक सिंचाई प्रणाली को अपनाया. आज वो खुशहाल हैं.

पंचायत	अताकोरा
प्रखंड	भरनो
जिला	गुमला

एक हजार किसानों को जोड़ने का लक्ष्य

भरनो प्रखंड क्षेत्र के करीब एक हजार किसानों के बीच टपक सिंचाई योजना को पहुंचाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है. इस योजना का लाभ क्षेत्र की महिला किसान भी बखूबी उठा रही हैं. महादेव चगरी गांव की ही महिला किसान धनिया उरांव ने अपने खेतों की सिंचाई टपक विधि से करती हैं. धनिया अपने 25 डिसमिल खेत में टमाटर लगाई हैं. पानी की बचत के लिए अधिक से अधिक किसानों को इस विधि का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है. धनिया इस विधि को अपना कर काफी खुश दिख रही हैं.

टपक सिंचाई विधि से खेती करना हुआ आसान : धनिया उरांव

महिला किसान धनिया उरांव कहती हैं कि जेएसएलपीएस के माध्यम से ड्रीप इरिगेशन की सुविधा मिलने से काफी लाभ हो रहा है. कहती हैं कि पहले पानी के अभाव में खेती करने में काफी परेशानी होती थी. अकेले खेतों की सिंचाई करना आसान नहीं था. पानी की भी अधिक जरूरत होती थी. खेतों में सिंचाई के लिए कम से कम दो लोगों की जरूरत होती थी,लेकिन अब टपक सिंचाई विधि से वो अकेली ही अपने खेत में सिंचाई कर लेती हैं. साथ ही इस विधि से खेतों में खाद की खपत भी कम होती है. कहती हैं कि इस विधि के माध्यम से जहां पानी इधर-उधर नहीं गिर कर सीधे पौधों की जड़ों तक पहुंचता है, वहीं मशीन के माध्यम से खाद सीधे पौधों तक पहुंचता है.

पानी बचाने के गुर सीख रहे हैं सिसई के किसान

गुमला जिले का सिसई प्रखंड. सिसई के लोगों का मुख्य पेशा कृषि है. यहां की जमीन ऊंची-नीची होने के कारण बारिश के मौसम के अलावा दूसरे मौसम में भी किसानों को खेती करना काफी मुश्किल काम है. कारण है ऊंचाई में खेत होने के कारण मुश्किल से पानी पहुंच पाता है. साथ ही ऊंचाई वाले खेतों में काफी कम समय तक नमी भी रहती है. अपने खेतों में पानी पहुंचाने में खर्च भी अधिक करना पड़ता है. इसी समस्या के समाधान को लेकर किसान टपक सिंचाई प्रणाली को आत्मसात करने लगे हैं. इससे कम पानी में ही खेतों की सिंचाई हो रही है.

प्रखंड	सिसई
जिला	गुमला

जायका प्रोजक्ट का लाभ उठाते किसान

इस प्रोजक्ट के तहत पानी की समस्या के समाधान के लिए सिसई प्रखंड के किसानों को ड्रीप इरिगेशन यानी टपक सिंचाई योजना का लाभ मिल रहा है. इसके तहत क्षेत्र के करीब एक हजार किसान इसका लाभ उठा पायेंगे. इससे किसानों को दोहरा लाभ मिलेगा. इस प्रणाली के तहत जहां किसानों को अपने खेत तक पानी व खाद पहुंचाने में कम खर्च करना होगा, वहीं मेहनत व समय की भी बचत होगी. पहले इलाके के किसानों को अपने-अपने खेतों में सिंचाई के लिए दो लोगों की जरूरत होती थी, लेकिन अब ड्रीप इरिगेशन के माध्यम से खेतों की सिंचाई एक व्यक्ति के सहारे भी हो सकेगा.

40 फीसदी तक बचेगा पानी

राज्य की भौगोलिक स्थिति के कारण सिंचाई करना हमेशा से किसानों के लिए एक समस्या रही है. साथ ही पानी को रोकना व बचा कर रखना भी मुश्किल भरा काम होता है, लेकिन ड्रीप इरिगेशन के माध्यम से करीब 40 फीसदी तक पानी की बचत होती है. वहीं इन बचे पानी का उपयोग किसान दूसरी फसल के लिए कर पायेंगे.

तालाब-कुएं पर अब भी निर्भर हैं यहां के किसान

वर्तमान में सिसई प्रखंड के किसान सिंचाई के लिए कुएं-तालाब पर ही निर्भर हैं. इस स्त्रोत से अपने-अपने खेतों में सिंचाई करने में किसानों को काफी परेशानी उठानी पड़ती है. पानी की बर्बादी होती है सो अलग. ऊबड़-खाबड़ जमीन होने के कारण भी कुएं-तालाब से खेतों में पानी पहुंचाना टेढ़ी खीर साबित होती है, लेकिन ड्रीप इरिगेशन के माध्यम से अपने खेतों में सिंचाई करने से अब यहां के किसानों को राहत मिल रही है.